

১- ইসলামী রাষ্ট্র পরিচালনাকারীর বৈশিষ্ট্য :

ক) পরিচালকের জ্ঞান ও সুস্থ শরীরের অধিকারী হতে হবে :

(বাকারা : ২৪৭) قال ان الله اصفاه عليكم و زاده بسطة في العلم و الجسم

খ) সমাজের প্রতি আন্তরিক থাকা :

(শূরার : ৩) لعلك باخع نفسك الا يكونوا مومنين

গ) ছবর ও ইয়াকিন থাকতে হবে :

(সিজদাহ্ : ২৪) و جعلنا منهم ائمة يهدون باياتنا يوقنون

ঘ) নমর স্বভাবের হতে হবে :

(আলে ইমরান : ১৫৯) فيما رحمة من الله من حولك

ঙ) প্রশস্ত বক্ষের অধিকারী হতে হবে :

(ত্ব-হা : ২৫-২৬) رب اشرح لي صدري و يسر لي لمري

চ) ন্যায়ের সাথে নির্দেশ করা :

(ছাদ : ২৬) يا داود انا الناس بالحق

২- ইসলামী রাষ্ট্রে বসবাসকারী মানুষের দায়িত্ব ও কর্তব্য :

ক) কোরআন ঐক্যবদ্ধ থাকার জন্য আহ্বান করে :

(আলে ইমরান : ১০৩) و اعتصموا بحبل الله جميعاً و لا تفرقوا

খ) আল্লাহর নির্দেশের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি দান :

(নিসা : ৫৯) فان تنازعتم في شئ فردوه الى الله و الرسول

গ) বেগানা লোকদের (ইসলামের শত্রুদের) সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করা :

(নিসা : ১৪৪) يا ايها الذين امنوا لا دون المومنين

ঘ) শত্রুদের প্রতিহত করার জন্য সর্বদা প্রস্তুত থাকা :

(ইনফাল : ৬০) و اعدو لهم ما استطعتم من الله عدوكم

৩- শত্রু চিহ্নিত করণ :

ক) কম খরচ করা :

ان الذين كفروا تكون عليهم حسره (ইনফাল : ৩৬)

খ) মুসলমানদের ক্ষমতাকে প্রকাশ না করা :

ان هولاء لشزيمة قليلون (শূয়ারা : ৫৪)

গ) অর্থনৈতিক কর্তৃত্ব অর্জন :

لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفصلوا (লোকমান : ৬)

৪- ঐক্য ও মত বিরোধ এড়ানোর প্রয়োজনীয়তা :

ক) তৌওহীদের প্রতি ঐক্যবদ্ধ হওয়ার জন্য দাওয়াত দেয়া :

قال يا اهل الكتاب تعالوا الى ارباباً من دون الله (আলে ইমরান : ৬৪)

খ) নিজেদের মধ্যে বিভক্তিকরণ প্রক্রিয়ার অবসান দেয়া :

و لا تكونوا كالذين لهم عذاب عظيم (আলে ইমরান : ১০৩)

গ) শত্রুর বিপক্ষে মুসলমানদের ঐক্যবদ্ধ থাকার প্রয়োজনীয়তা :

ان الله يحب الذين بنیان مرصوص (ছাফ : ৬)

ঘ) বিরোধীতার মূল উৎস হচ্ছে আক্বলহীন কথা-বার্তা :

تحسبهم جميعاً لا يعقلون (হাশার : ১৪)

ঙ) যা বিভেদ করে তা নবীর (সাঃ) কাছ থেকে বিতাড়িত :

ان الذين منهم في شيء (আনয়াম : ১৫৯)

৫- সমাজের বিভিন্ন ক্ষেত্রের ন্যায়-পরায়ণতা :

ক) আল্লাহর বাণী ন্যায়ের পক্ষে :

ان الله يامر بالعدل و الاحسان (নাহ্ল : ৯০)

খ) নবীগণ প্রেরণের কারণ হচ্ছে ন্যায় প্রতিষ্ঠা করা :

لقد ارسلنا بالبينات ليقوم الناس بالقسط (হাদিদ : ২৫)

গ) কথা বলার সময় ন্যায়ের পস্থা অবলম্বন করা :

(আনয়াম : ১৫২) و اذا قلتم فاعد لواء لو كان ذا قربي

ঘ) স্বাক্ষ্য দানের সময় ন্যায়ের পস্থা অবলম্বন করা :

(মায়দাহ্ : ৮) يا ايها الذين بالقسط

ঙ) লেখার ক্ষেত্রে ন্যায়ের পস্থা অবলম্বন করা :

(বাকারাহ্ : ২৮২) و ليكتب بينكم كاتب بالعدل

৬- জুলুম ও অত্যাচার :

ক) আল্লাহ্ কখনো তাঁর বন্দার উপর জুলুম করেন না :

(বাকারাহ্ : ১৬০) و ما ظلمناهم و لكن كانوا انفسهم يظلمون

খ) সব থেকে বড় জুলুম হচ্ছে আল্লাহ্‌র সাথে কারো শরীক করা :

(লোকমান : ১৩) ان الشرك لظلم عظيم

গ) জুলুমকারী পরিচালক হওয়ার যোগ্যতা রাখে না :

(বাকারাহ্ : ১২৪) و لا ينال عهدى الظالمين

৭- আল্লাহ্‌র পরীক্ষা :

ক) আল্লাহ্‌র সুন্নতের মাধ্যমেই সকল মানুষকে পরীক্ষা করবেন :

(রুম : ১) احسب الناس ان يتركوا ان يقولوا امنا و هم لا يفتنون

খ) আল্লাহ্‌র সুন্নতের মাধ্যমেই সকল মু'মিনকে পরীক্ষা করবেন :

(আলে ইমরান : ১৭৯) ما كان الله ليذر المومنين من الطيب

গ) যুদ্ধ ও জিহাদ হচ্ছে পরীক্ষার ময়দান :

(আহ্‌যাব : ১১) هنالك ابتلى المومنون و زلزلوا زلزلاً شديداً

৮- আল্লাহ্‌র সাহায্য :

ক) আল্লাহ্‌ মানুষের উত্তম সাহায্যকারী :

(ইনফাল : ৪০) نعم المولى و نعم النصير

খ) আল্লাহর কাছে সাহায্য প্রার্থনা :

(আলে ইমরান : ১৪৭) ثبت اقدمنا و انصرنا على القوم الكافرين

গ) আল্লাহ্ আশ্রিয়া ও মু'মিনগনের সাহায্যকারী :

(গাফির : ৫১) انا لننصر رسلنا و الذين امنوا فى الحيوۃ الدنيا

৯- মানুষের ইজ্জত ও অপমান :

ক) মানুষের ইজ্জত ও অপমান আল্লাহর হাতে :

(নিসা : ১৩৯) الذين يتخذون العزة فان العزة لله جميعاً

খ) ভাল ও মন্দের উভয় কারণেই ইজ্জত ও অপমান হতে পারে :

(আলে ইমরান : ২৬) قل اللهم ما لك على كل شىء قدير

গ) ইজ্জত পাওয়ার উপায় হচ্ছে দৃঢ় ঈমান রাখা ও ভাল কাজের আঞ্জাম দেয়া :

(ফাতির : ১০) من كان يريد الصالح يرفعه

ঘ) অপমানীত হওয়ার উপায় হচ্ছে আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কিছুকে পূজা-অর্চনা করা :

(আ'রাফ : ১৫২) ان الذين اتخذوا العجل فى الحياة الدنيا

১০- অসহায় মানুষ :

ক) অসহায় মানুষের মুক্তির লক্ষ্যে প্রতিরোধ করার জন্য আহ্বান :

(নিসা : ১৭৫) و ما لكم لا الظالم اهلها

খ) অসহায় মানুষকে সাহায্য করা :

(হাজ্জ : ৩৯) اذن للذين يقاتلون نصرهم لقدير

গ) অসহায় অবস্থার কথা স্মরণ করা :

(ইনফাল : ২৬) و اذكروا اذ انتم قليل مستضعفون فى الارض

১১- অহংকারী মানুষ :

ক) অহংকার হচ্ছে শয়তানের বৈশিষ্ট্য :

(বাকারাহ্ : ৩৪) ابى و استكبر و كان من الكافرين

খ) অহংকার হচ্ছে কাফেরদের বৈশিষ্ট্য :

(জাছিয়া : ৩১) و اما الذين كفروا و كنتم قوماً مجرمين

গ) অহংকার হচ্ছে ইয়াহুদিদের বৈশিষ্ট্য :

(বাকারাহ্ : ৮৭) افكلما جاءكم رسول بما لا تهوى انفسكم استكبرتم

১২- সুন্দর্যতা :

ক) সমস্ত সুন্দর্যের মালিক হচ্ছেন আল্লাহ্ নিজেই :

(আনয়াম : ১০৮) كذلك زيننا لكل امة عملهم

খ) মানুষের সৌন্দর্য্য হচ্ছে ঈমান :

(হুজুরাত : ৭) و لكن الله حيب اليكم الايمان و زينه فى قلوبكم

গ) তারকারাজী আসমানের সৌন্দর্য্য :

(সাফ্যাত : ৬) انا زيننا السماء الدنيا بزينة الكواكب

১৩- মসজিদ :

ক) মসজিদ হচ্ছে একক আল্লাহ্ৰ উপসনা করার স্থান :

(জ্বিন : ১৮) و ان امسجد لله فلا تدعوا مع الله احداً

খ) মসজিদ আল্লাহ্ৰ জিকির করার স্থান :

(হাজ্জ : ৪০) و لو لا دفع فيها اسم الله كثيراً

গ) শুধুমাত্র মুত্তাকিনরাই মসজিদের পরিচালক হতে পারবেন :

(ইনফাল : ৩৪) و ما لهم ان لياوه الا المتقون